भारतीय संगीत के तन्त्रीवाद्य

डॉ. प्रकाश महाडिक

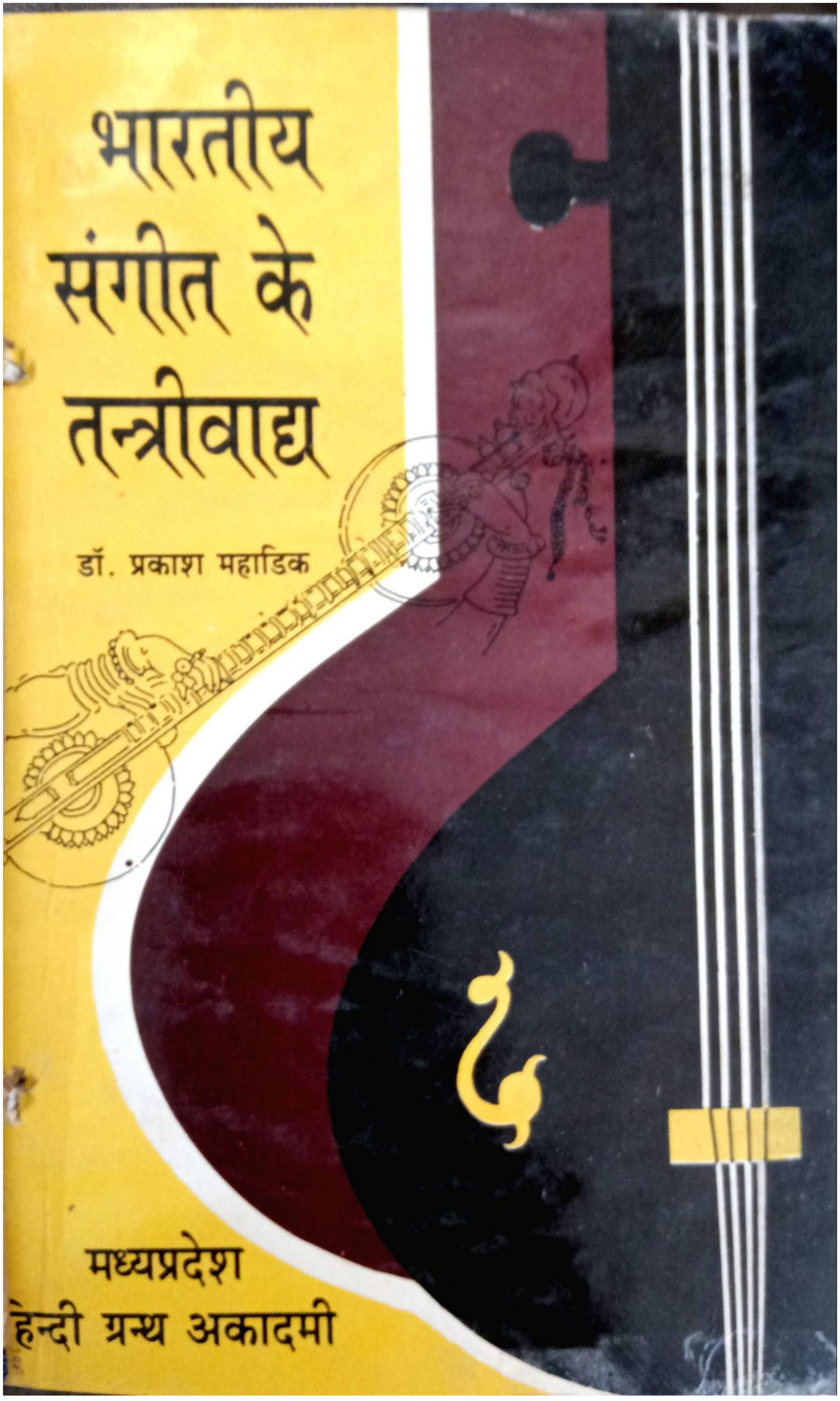

मध्यप्रदेश
हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Scanned by TapScanner

विषय-सूची

		पृष्ठ क्र.
प्राक्कथन		
प्रस्तावना		
आमुख		
भूमिका		
प्रथम अध्याय :	तन्त्री वाद्यों की महत्ता एवं वर्गीकरण	1-15
	– तन्त्री वाद्यों की श्रेष्ठता एवं लोकप्रियता, तन्त्री वाद्यों की लोकप्रियता, संगीत शास्त्र के विकास में योगदान , तन्त्री वाद्यों के ऐतिहासिक महत्व, तन्त्री वाद्यों के अन्य महत्वपूर्ण गुण , तन्त्री वाद्यों की परिभाषा (तन्त्री शब्द की व्युत्पत्ति ग्रन्थोक्त संदर्भ एवं परिभाषा), तन्त्री वाद्यों का वर्गीकरण वर्गीकरण का अर्थ एवं महत्व, वाद्य वर्गीकरण का इतिहास, वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण, वादन तकनीक के आधार पर वर्गीकरण	
द्वितीय अध्याय :	प्राचीन तन्त्री वाद्य–	16-39
	–वैदिक वांग्मय में उपलब्ध वाद्य, बाण वीणा, गर्गर, कर्करी, गोधा, आघाटी, काण्डवीणा, घाटलिका, महावीणा, कात्यायन वीणा, अलाबु वीणा, कपिशीर्षणी वीणा, काश्यप वीणा, पिशील, क्षोण रामायण, महाभारत, जैन तथा पुराण साहित्य में उपलब्ध वाद्य वल्लकी , सप्त तन्त्री ,परिवादिनी नाट्यशास्त्र में उपलब्ध वाद्य चित्रा, विपंची, कच्छपी, घोषका, मत्तकोकिला	
तृतीय अध्याय	मध्यकालीन तन्त्री वाद्य	
खण्ड –अ	पूर्व मध्यकालीन तन्त्री वाद्य	40-56
	एकतन्त्री , ब्रह्म, आलापिनी ,,किन्नरी,, त्रितन्त्री, नकुला, पिनाकी	
खण्ड – ब	उत्तर मध्यकालीन तन्त्री वाद्य	56-70
	कच्छपी , विपंची , रबाब, सुरसिंगार	

Scanned by TapScanner

चतुर्थ अध्याय — आधुनिक तन्त्री वाद्य — पृष्ठ क्र.

खण्ड - अ — -प्रहार तन्त्री वाद्य — 71-135

वीणा (बीन) : वीणा का नाम रुद्रवीणा पड़ने के कारण (रुद्रवीणा का ग्रन्थोक्त अध्ययन) वर्तमान रुद्रवीणा की रचना रुद्रवीणा की धारण विधि बीन वादन की तकनीक , रुद्रवीणा के तार तन्त्रियों को मिलाने की पद्धतियाँ , बीन वादन की तकनीक , बीन में आलाप के अंग , बीन की दो वादन शैलियाँ

सितार : उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मत , सितार की उत्पत्ति समुद्र गुप्त काल में हुई ? , सितार की उत्पत्ति चित्रा एवं परिवादिनी से हुई ?, सितार की उत्पत्ति त्रितन्त्री वीणा से हुई ? सितार एक विदेशी वाद्य है ?, सितार के आविष्कारक अमीर खुसरो हैं ?, सितार के आविष्कारक खुसरो खॉ फकीर हैं ?, सितार की उत्पत्ति तम्बुर से हुई ?, चित्रकला में सितार, सितार की आकृति का अध्ययन (तुम्बे, पर्दे) , सितार के तार (तीन से सात तार तक मिलाने की विभिन्न पद्धतियाँ) , आधुनिक सितार वादक एवं सितार मिलाने की पद्धति, तरब, सितार के अन्य भाग , सितार वादन तकनीक तकनीकी, दृष्टि से सितार वादन की सीमा

सुरबहार : (सुरबहार के आविष्कर्ता पर विचार), सुरबहार की आकृति, सुरबहार के तार, बीन और सुरबहार की तुलना

सरोद : (सरोद का इतिहास) , सरोद की रचना , सरोद के तार, सरोद की दो शैलियाँ (रबाब और सुरश्रृंगार शैली), तकनीकी दृष्टि से सरोद वादन की सीमा

विचित्रवीणा : (विचित्र वीणा की ऐतिहासिकता पर विचार), विचित्र वीणा की आकृति , विचित्रवीणा की वादन तकनीक

संतूर : (संतूर और शततन्त्री वीणा के संबंध का अध्ययन), संतूर की आकृति, संतूर के तार, तकनीकी दृष्टि से सन्तूर वादन की सीमा

तानपूरा : (तानपूरा और अनिबद्ध तम्बूर) , तानपूरे की आकृति, तानपूरे के तुम्बे और दाण्ड के विभिन्न परिमाण , तानपूरे के तार

Scanned by TapScanner

स्वर मण्डल : (स्वर मण्डल और मत्तकोकिला वीणा का संबंध), (मध्यकालीन उर्दू साहित्य में स्वर मण्डल), स्वर मण्डल की आकृति, स्वर मण्डल की वादन तकनीक — पृष्ठ क्र.

खण्ड -ब — **गज़तत् वाद्य** — 135-172

वॉयलिन (बेला) : वॉयलिन की उत्पत्ति संबंधी अध्ययन, गॉस्पर डुइफोप्रगर और वॉयलिन, आन्द्रा आमाती और वायलिन, गैसपारो बरतोलेत्ती (गैस पर द सालो) और वॉयलिन, वायल और वॉयलिन, वॉयलिन का विकास, भारत में गज़ वाद्यों का प्रयोग, भारत में वॉयलिन का प्रयोग, दक्षिण भारत में वॉयलिन का उपयोग, उत्तर भारत में वॉयलिन का प्रयोग, वॉयलिन के विभिन्न अवयव, तार मिलाने की विभिन्न पद्धतियाँ, पाँच तार का वॉयलिन, वॉयलिन और तरबें, बेला का गज़, तकनीकी दृष्टि से बेला वादन की सीमा, वॉयलिन वादन तकनीक

सारंगी : (ग्रंथोक्त आधार पर सारंगी का अध्ययन), सारंगी की आकृति, सारंगी के तार, तरब के तार, वादन तकनीक, शास्त्रीय संगीत में प्रचलित होने के कारण, वादन तकनीक सीमा, सारंगी की लोकप्रियता में कमी आने के कारण

इसराज : (इसराज उत्पत्ति के कारण) इसराज की आकृति, इसराज की वादन तकनीक

दिलरूबा : (दिलरूबा प्रचलित होने के कारण), दिलरूबा की आकृति, दिलरूबा के तार, तकनीकी दृष्टि से इसराज एवं दिलरूबा की वादन सीमा।

Scanned by TapScanner